# :- स्त्री राजयोगों की ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता :-

स्त्री जातकम् वैदिक काल का ग्रन्थ है जो स्त्री के उत्थान व राजयोगों का परिसिमन तय करता हैं। मुख्यतया सोलह प्रकार के राजयोगों की चर्चा यहाँ की गई है - जिनके द्वारा नारी का राजयोग, उनका सशक्त जीवन, विवाहोपरान्त ऐश्वर्य पूर्ण जीवन का संज्ञान लिया जा सकता है चूंकि शास्त्राकारों ने कहा है -

**ग्रहाधीनं जगत्सर्व, ग्रहाधीनं नरा वराः ।।**
**ग्रहाधीन काल ज्ञानमू, काल कर्म फल प्रदाः ।।**[1]

पूरा जगत ग्रहों के अधीन है प्रत्येक नर व नारी ग्रहों के अधीन हैं, काल का ज्ञान व नारी का समय, उसके सशक्तिकरण का ज्ञान भी ग्रहों के अधीन हैं। इसी काल के द्वारा कर्म का फल प्रदान किया जाता है।

**राजयोग कुंडलीयम् - 1**

जिस स्त्री के जन्मकाल में जन्मलग्न में बृहस्पति और सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तथा दशम स्थान में अपने वर्ग का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री अन्त्यजजाति में पैदा होकर भी राजा की प्यारी अर्थात् अत्यंत ऐश्वर्य भोगी होती है।[2]

**मूर्तौ सुरेज्योस्तगतः शंशाकोअथवा स्ववर्गे गगने च शुक्रः ।।**
**जातांत्यजानामपि जातिरत्र योगे भवेत्पार्थिववल्लभा च ।।**

**राजयोग कुंडलीयम् - 2**

www.drjitendraastro.com

**स्त्री राजयोगों की ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता**

जिस स्त्री के जन्मकाल में एक अकेला बृहस्पति ही षड्वर्ग में शुद्ध होकर 1/4/7/10 इन भावों पर विराजित हो और चन्द्रमा देखता हो या उसके साथ बैठा हो तो ऐसी नारी रानी के समान श्रैष्ठ धनवती होती है।[3]

**राजयोग कुंडलीयम् - 3**

जिस स्त्री के जन्मांग में 1/4/7/10 स्थानों पर शुभ ग्रह (गु, च, शु, बु) स्थित हो, 3/6/11 पर अशुभ ग्रह स्थित हो तो और सप्तम में मनुष्य राशि स्थित हो तो ऐसी स्त्री शांतस्वरूपा, श्रैष्ठ पुत्रवती, बहुत धन सम्पदायुक्त, खजानायुक्त व रानी के समान भोगी होती है - **यथा**

**केन्द्रेषु सौम्याअरिवंधुलाभे पापाः कलत्रे च मनुष्यराशिः ।**
**राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोशयुक्ता नित्यं प्रशांता च सुपुत्रिणी स्यात् ।।[4]**

**राजयोग कुंडलीयम् - 4**

जिस कन्या के जन्मकाल में ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा स्थित और सप्तम स्थान में बुध युक्त शुक्र स्थित हो, बृहस्पति की दृष्टि हो तो ऐसे स्त्रियां रानी होती है जिसकी स्तुति सदैव होती है ।[5]

**राजयोग कुंडलीयम् - 5**

www.drjitendraastro.com

**स्त्री राजयोगों की ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता**

जिस स्त्री के जन्मांग में बुध उच्च का स्थित हो तथा ग्यारवें स्थान में बृहस्पति स्थित हो तो ऐसे योग में उत्पन्न स्त्री राजातुल्य मनुष्य की पत्नी होती हैं या प्रशासनिक सेवारत होकर स्त्रियों के प्रसंग में धरती पर प्रसिद्ध होती है ।[6]

**राजयोग कुंडलीयम् - 6**

जिस नारी के जन्मांग में तीसरे भाव में बुध स्थित हो, बृहस्पति षड्वर्ग में शुद्ध होकर चतुर्थ स्थान में स्थित हो तथा लग्न में शुक्र स्थित हो ऐसी स्थित आज के परिप्रेक्ष्य में उच्चाधिकारी होती है । एक समूह या सेना की अध्यक्षा होकर रानी के समान क्रूर आज्ञा देने वाली होती है ।[7]

**राजयोग कुंडलीयम् - 7**

www.drjitendraastro.com

**स्त्री राजयोगों की ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता**

**त्रिभिरूच्चग्रहैः** - **जिन** स्त्रियों के जन्मकाल में षड्वर्ग में शुद्ध **तीन ग्रह उच्च** के होते है तो ऐसी स्त्री युवराज की पत्नी होती है । **चतुर्भिरूच्चग्रहैः - यदि चार ग्रह उच्च** के हो तो ऐसी नारी राजा की पत्नी अर्थात् पूर्ण ऐश्वर्य शाली होती हैं । **पंचभिरूच्चग्रहैः** - यदि **पांच ग्रह उच्च** के हो तो ऐसी नारी महाराजा की पत्नी अर्थात् अत्यन्त गुणवती, धनवंती व इन्द्राणी के समान राज करने वाली होती हैं । **षड्भिरूच्चग्रहैः, सप्तभिरूच्चग्रहैः - यदि 6 या 7 ग्रह उच्च, मूल त्रिकोण व स्वगृही** हो तो ऐसी नारी त्रिलोकीनाथ की पत्नी के समान, पार्वती स्वरूपा सुख सम्पदा का आनन्द लेने वाली होती है[8] - **यथा**

**षड्वर्गशुद्धस्त्रिभिरेव मंत्री चतुर्भिरीशस्य तथैव पत्नी ।।**
**पंचादिभिर्दिव्यतिमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ।।**

**राजयोग कुंडलीयम् 8 -**

जिस नारी के जन्मांग में कर्क लग्न का उदय हो, सातवें भाव में चन्द्रमा हो तथा केन्द्र स्थान में कोई पाप ग्रह न हो ऐसे योग में उत्पन्न भी रानी के समतुल्य होती है, उसका पति सैनाध्यक्ष होकर, शत्रुदल पर विजय पाने वाला होता है, ऐसी नारी नारियों में प्रधान होती है ।

**कुलद्वयोन्नतिकारिणी योग -**

जिस नारी के जन्मकाल में बृहस्पति उच्च या स्वक्षैत्री होकर केन्द्र (1/4/7/10) या त्रिकोण (5,7,9) में स्थित हो ऐसी नारी समस्त विभूतियां सम्मत, पतिव्रता, सत्पुत्रों की पैदा करने वाली, श्रैष्ठ गुण युक्त, मातृकुल व श्वसुर कुल की बड़ी उन्नति करने वाली होती है अर्थात् नारियों में श्रैष्ठ होती है।[9]

www.drjitendraastro.com

**वाचस्पतिर्नवमपंचमकंटकस्थो जातागंना भवति पूर्णविभूतियुक्ता ।**
**साध्वी सुपुत्रजननी सगुणा सुरूपा नूनं कुलद्वयमहोन्नतिकारिणी सा ।।**

**राजयोग कुंडलीयम् - 9**

जिस नारी के जन्मकाल में कुंभ लग्न हो तथा चतुर्थ चन्द्रमा उच्च का हो तथा बृहस्पति उसे देखता हो तो ऐसे योग में जन्मी नारी पुत्र-पौत्रों से युक्त, शत्रुदल को जीतने वाली वीरांगना समान रानी होती है ।[10]

**दशमों राजयोग कुंडलीयम् - 10**

जिस स्त्री के जन्मांग में चतुर्थ स्थान पर स्वगृही बुध षड्वर्ग में शुद्ध बृहस्पति युक्तहोकर विराजित हो तथा शुक्र की दृष्टि उस पर हो तो वह नारी नौपत, नगाड़े व डंकों की ध्वनिमत से ही रानी होती है ।[11]

**एकादश राजयोग कुंडलीयम् - 11**

www.drjitendraastro.com

**स्त्री राजयोगों की ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता**

जिन स्त्रियों के जन्मकाल में मंगल तीसरे या छठे भाव में स्थित हो और षड्वर्ग में शुद्ध शनि ग्यारवें स्थित हो तथा स्थिर लग्न में बृहस्पति विराजित हो तो ऐसी नारी रानी के समान तथा नृपतुल्य पति की प्यारी होती है ।[12]

**द्वादश राजयोग कुंडलीयम् - 12**

जिन स्त्रियों के जन्मकाल में अष्टम स्थान में स्थित उच्च का सूर्य और बलवान पूर्णिमा का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तथा बुध दशम में स्थित हो तो ऐसी स्त्रियों का पति ग्राम, नगर का प्रधान व राजनीति व सैन्य प्रधान होता है ।[13]

**आयुस्थितस्तीक्ष्णकरः स्वतुंगे मुर्तौ शशांकः परिपूर्णदेहः ।।**
**सौम्योम्बरस्थः कुरूते च राज्ञीं पतिप्रधानां बहुपुत्रपौत्राम् ।।**

**त्रयोदशो राजयोग कुंडलीयम् - 13**

जिन स्त्रियों के जन्मकाल में षड्वर्ग शुद्ध सूर्य तृतीय स्थान में तथा शनि छठे स्थित में हो तो ऐसी स्त्री रानी के समान होती हैं, धर्मज्ञों में प्रधान व अपने पति की प्यारी होती है ।[14]

**चतुर्थदश राजयोग कुंडलीयम् - 14**

www.drjitendraastro.com

जिन स्त्रियों के जन्मांग में स्थिर लग्न हो चन्द्रमा व बुध लग्न में स्थित हो या उसके द्वारा देखा जाता हो तथा एकादश भाव में शुक्र उच्च का हो तो ऐसे योग में पैदा हुई नारी हाथियों के हलके में चलती है अर्थात् नारी रानी होती है ।[15]

**पंचदशो राजयोग कुंडलीयम् - 15**

जिन स्त्रियों के जन्मांग में ग्यारवें स्थान में चन्द्रमा और सप्तम स्थान में शुक्र व बुध स्थित हो, बृहस्पति यह युति दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री की पृथ्वी में समस्तजनों द्वारा स्तुति की जाती है अर्थात् विश्व पर्यन्त विख्यात होती है ।[16]

**षोडषशो राजयोग कुंडलीयम् - 16**

जिस स्त्री के जन्मांग में बृहस्पति व शुक्र बली होकर सातवे भावस्थ हो तथा दशम का स्वामी 1,4,2,5,9,10,11 वें में से किन्हीं एक स्थान पर विराजित हो ऐसे योगों में जन्मी स्त्रियाँ चन्द्रमा का मुख लिये हुए, कमल के दल के समान नैत्र होते हैं जिनके, स्त्री रूप युक्त श्रैष्ठ शोभा युक्त, राजलक्ष्मी मणियों से जड़ित महलों में हमेशा दास भावों को प्राप्त किये हुए पति की पत्नी होती है।[17]

**यथा**

**जीवो वा भार्गवो वा परमबलयुतः कामभावेषु यासां कर्म्मेशो**
**धर्मलाभे तनुसुखतनये कर्मकोशे बलस्थः ।**
**तासां चंद्राननानां कमलदलदृशां नायिका रूपयुक्ता राजंते**
**राजलक्ष्म्या मणिमयशिबिरे दासभावे सदैव ।।**

www.drjitendraastro.com

**स्त्री राजयोगों की ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता**

उपरोक्त शास्त्रार्थ तथ्यों में नारी के सशक्तिकरण का मूल ज्योतिषिय भी एक वृहत् चिंतन-मंथन का विषय है जिसे अच्छे देवज्ञ द्वारा फलिभूत भी करवाया जा सकता है परन्तु इन सभी योगों का जन्मांग में निरूपण आवश्यक है।


जितेन्द्र व्यास (चीण क्ण पद ज्योतिष)
ठब्।ए डठ।ए
ड। ;श्रलवजपेीद्ध
ज्योतिष विशारद ज्योतिष मार्तण्ड
नेशनल कॉलमनिस्ट ;कंपदपा ठींतद्ध


www.drjitendraastro.com

**त्ममितमदबमे रू**

1. ज्योतिष मार्तण्ड/अज्ञात दर्शन कार्यालय/प्रका. 2005/जोधपुर
2. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय/प्रकाशक-खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक1/पृ. स. 77
3.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय/ प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक2/ पृ. स. 77
4.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय/ प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक3/ पृ. स. 78
5.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक4/पृ. स. 79
6.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक5/पृ. स. 79
7.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक -खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 6/ पृ. स. 80
8.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 7/पृ. स. 81
9.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 8/ पृ.स. 82
10.. स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 9/पृ. स. 82
11..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक -खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 10/ पृ. स. 84
12..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 11/पृ.स. 84
13..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 12/पृ.स. 85
14..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 13/पृ.स. 86
15..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय /प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 14/ पृ. स. 86
16..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय / प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक 15/पृ.स. 87
17..स्त्री जातकम्/राजयोगाध्याय/ प्रकाशक - खेमराज कृष्णदास, मुम्बई/श्लोक16/पृ. स. 88

www.drjitendraastro.com